

सहनशीलता

सच्चा आत्मिक स्नेह शक्ति देता है। इस शक्ति से ही परमात्म प्यार दृढ़ होता है। यह शक्ति हिम्मत का स्रोत है। हिम्मत का पहला कदम समर्पण है तो दूसरा कदम सहनशीलता है।

सहनशील कोई भी परिस्थिति में उदास नहीं होता। हंसते-हंसते समस्या का सामना करता है। उन्हें खेल समझ हल्का रहता है। तिल का ताड़ नहीं करता बल्कि पहाड़ को गेंद बनाकर विस्तार को सार रूप में समता है। 'नर्थांगन्यू' का पाठ पक्का कर बातों को विराम देता है ताकि मामला सुलझे, बिगड़े नहीं। ऐसी आत्मा सदा ज्ञान-योग में स्थित रह समस्याओं से, किसी भी व्यक्ति, वैभव से प्रभावित नहीं होती। ब्रह्मा बाबा इसकी जीती-जागती मिसाल थे। इसलिए वह सदा समर्थ स्वरूप रहे।

सहनशीलता की धारणा हमारे शान्त स्वरूप पर निर्भर होती है। ताल ठोककर जवाब देनेवाले को दुनिया तेजस्वी समझती है, लेकिन यह तेज नहीं है। सहनशील हो वास्तव में



अधिक तेजस्वी है। बड़े लोग कार्य-व्यवहार में बहुत बार टिंगणे दिखते हैं लेकिन आम आदमी भी कई बार अपनी सहनशीलता, दिलेरी से आकाश छू लेते हैं। सहनशीलता का रंग संग से भी सहज लाता है।

एक बार तथागत ने अपने शिष्यों को कहा "भिक्षुकों, तुम्हें एक कठिन जिम्मेवारी पर दूसरे देश में जाना है। वहां जाके तुमने वहां के लोगों को कुछ कहा और उन्होंने सुना नहीं, तो तुम क्या करोगे?"

"भागवन, ऐसा हुआ तो हम समझेंगे कि यहां के लोग कितने अच्छे हैं। उन्होंने सुना नहीं यह सच है, फिर भी हमको गाली तो नहीं दी।" फिर बुद्ध बोले, "ठीक है, समझो उन्होंने तुम्हें गाली दी, अपशब्द उच्चारें तो?" शिष्यों ने जवाब में कहा, "फिर भी हम समझेंगे कि ये लोग कितने सज्जन हैं। इन्होंने गाली दी, अपशब्द उच्चारें, मारपीट तो नहीं की।" "और समझो, उन्होंने तुम्हें मारा-पीटा तो?" बुद्ध ने फिर पूछा। "फिर भी हम कहेंगे कि ये लोग कितने भले, नेक इंसान हैं क्योंकि उन्होंने हमारी जान तो बखरी।" शिष्यों ने उत्तर दिया "समझो, उन्होंने तुम्हारी जान ही ले ली तो?" "फिर भी हम यही कहेंगे कि यहां के लोग कितने सज्जन हैं। इन्होंने हमें ईश्वर का काम करते हुए ईश्वर के चरणों तक तो पहुंचा दिया।"

शिष्यों का उत्तर सुनकर तथागत मुस्कराये। फिर कहने लगे "भिक्षुकों, जाओ,

आगे बढ़ो, तुम परीक्षा में उत्तीर्ण हो गये।"

सहनशीलता की ऐसी ही पराकाष्ठा हमारे पुरुषार्थ में शिवबाबा चाहते हैं। तभी हम ऊंच पद के अधिकारी हो सकेंगे। जीवन एक रण-भूमि है। जो रणछोड़-दासों से भरी पड़ी है। आने वाला समय बड़ा कठिन है। ऐसे समय में परिस्थितियों का सामना करने के लिए सहनशक्ति को प्रचंड रूप में बढ़ाना होगा। ऐसी हालत में मम्मा (जगदम्बा) भी हमेशा तीन शक्तियों के वरदानों की सौगात साथ रखने का बच्चों से अनुरोध करती थीं।

1. समेटने की शक्ति। 2. सहनशक्ति। 3. सामना करने की शक्ति।

समेटने की शक्ति से हम नष्टोन्मोहा होंगे, बुद्धि एक में एकाग्र होगी। सहन करने से हल्के रहेंगे, उमंग-उत्साह, चमक बढ़ेगी। सामना करने की शक्ति से बलशाली होंगे।

सहनशीलता कमजोरी नहीं है। वह वीरता का श्रृंगार है। उदारता से क्षमा करना यह आत्मा की महानता है। गुरुदेव रामाडे बड़े आध्यात्मिक



पुरुष थे। उनके पास एक बार एक सज्जन आये। उनसे कोई भूल हुई थी इसलिए वो गुरुदेव से क्षमा मांग रहे थे। गुरुदेव बोले, "मैं क्षमा नहीं करूंगा।" तब उस सज्जन ने कहा "आप मुझे दीक्षा देगें और क्षमा नहीं करेंगे?" इसके उपरान्त गुरुदेव ने कहा कि दीक्षा देने के लिए जितनी शक्ति लगती है, उससे ज्यादा शक्ति क्षमा करने के लिए चाहिए। लेकिन अगर आप क्षमा ही चाहते हैं तो अधिक समय नेक-साधना करो।

सचमुच यही सही रास्ता है। अंतःकरण की शुद्धि के लिए साधना-तपस्या यही उपाय है। योग्य पुरुषार्थ है। इसीसे ही सकारात्मक विचार करने की ताकत आती है। नकारात्मकता, यह जीवन यात्रा में एक भुलावा है। उससे आगे बढ़ने के बजाए हम फिर से मूल स्थान पर आ जाते हैं। सहनशीलता हमें सकारात्मकता का पाठ पढ़ाती है। जीवन जीने की नई दृष्टि देती है।

सहनशीलता हमें सहिष्णु बनाती है। सहिष्णुता का मायना यह नहीं कि दूसरों से उदासीन दृष्टि रखें। बल्कि उनका न्यारापन, उनकी भिन्नता भी अपनाने, उनका आदर करें। पिण्डे-पिण्डे मतिभिन्नः। विचारों की, मतों की, संस्कारों की विविधता तो स्वाभाविक ही है। शिवबाबा ने भी हमें हमारे गुण, भिन्नता, विशेषताओं के साथ स्वीकार किया, वहां छलनी नहीं लगाई। परंतु सबको संस्कार

परिवर्तन की एक ही श्रमिता दी, कोई भेद नहीं किया। एक ही समझ, एक ही शिक्षा दी। यह प्रभु की दिव्यता ही विश्व परिवर्तन का आधार है।

समाज में रहते कई बातें होती हैं। मान-अपमान, निंदा-स्तुति, हार-जीत। लेकिन सहनशीलता के अभाव में या कमी के कारण एक खेल शुरू होता है। कोई झूठ बोला तो क्रोध आता है, सहयोग नहीं मिला तो नाराज होते हैं। इस प्रकार प्रभावित होना कतई समझदारी नहीं है। सहनशील समझदार होता है।

रिश्तेदारी में, मित्र-सम्बन्धों में आत्मियता, दिव्यता लाने के लिये सहनशीलता जरूरी है। हरेक के लिए शुभ-भावना, शुभ-कामना, कल्याण की वृत्ति रखनी है। बदले में कोई अपशब्द, कटुवचन कहे, बैर करें, हसद करे तो उसे उसकी कमजोरी, दुर्बलता समझ, लाचारी समझ नजरअंदाज करना है। अपनी कल्याण की वृत्ति से उसे सहनशीलता का पाठ पढ़ाना है। सहनशक्ति श्रेष्ठ शक्ति है, सद्गुण भी है। मुझे सहनशक्ति का अवतार बन औरों को शान्ति की अनुभूति करानी है। मेरे संस्कार परिवर्तन का, निष्काम, निःस्वार्थ, सच्ची सेवा का आधार मेरी सहनशीलता ही है। सहनशील, शक्ति स्वरूप आत्मायें ईश्वर को भी भाती हैं।

एक बार मुहम्मद पैगम्बर अपने अबुबकर नामक शिष्य के साथ जा रहे थे। रास्ते में विश्राम के लिये दोनों एक जगह रुक गये। वहां रुके हुए एक व्यक्ति ने अबुबकर को बेवजह गाली दी। तथापि, अबुबकर ने उधर ध्यान नहीं दिया। फिर उस व्यक्ति ने गुस्से में आकर ढेर सारी गालियां सुनाईं। फिर भी अबुबकर चुप रहे। उस व्यक्ति ने फिर बौखलाहट में गाली की बौछार शुरू कर दी।

फिर क्या? अबुबकर के सब्र का बांध टूट गया। उसने भी जमकर गाली दे दी। यह देखकर पैगम्बर नाराज हो गये और उठकर जाने लगे। अबुबकर भी पीछे-पीछे चल दिये। फिर पैगम्बर को बोले, "हुजूर, ऐसा क्यों?"

पैगम्बर बोले, "अबुबकर जब तक तू चुप था तब तक अल्लाह का फरिश्ता तेरे साथ था, लेकिन जैसे ही तूने चुप्पी तोड़ी, वह फरिश्ता तेरा साथ छोड़ चलता बना।" हर हाल में सहनशीलता ही हमें शान्त, अचल, साक्षी रख सकती है। यह भूलना नहीं है। महापुरुषों में परिस्थिति-जन्य आघात, प्रहार, उद्रेक सहन करने की क्षमता होती है। पुरुष के पास शारीरिक बल होता है, लेकिन भाव-जीवन में नारी ही अधिक सहनशील होती है। इसीलिए शायद परमात्मा ने भी यज्ञ-कलश माताओं के सिर पर रखा होगा।

हमारी वेदना का बोझ ईश्वर ही ढोता है। नम्रता, करुणा, सहनशीलता, इन गुणों से केवल संस्कार ही श्रेष्ठ नहीं होते, हमारा जीवन भी समृद्ध और खुशखूदर होता है। सहनशीलता ही हमें देही-अभिमानि बनाती है। वाकई हम आत्म-तत्व को दखल नहीं देते। देह एक तुरंग है। इस तुरंग में एक बंदी है। उसपे कोई ध्यान नहीं देता। कवि रविन्द्रनाथ जी अपनी 'गीतांजली' में कहते हैं - लोग केवल तुरंगों को दीवारों की चिंता करते हैं, लेकिन सच में बंदी रूपी आत्म-तत्व की फिक्र करने की दरकार है। विवेक से अगर इस तत्व की देखभाल हो तो वह हीरे तुल्य हो जायेगा। 'शिव बाबा भी तो यही -शेष पेज 8 पर



वीकानेर-राज.। ब्र.कु. रजनी के हुए भव्य समर्पण समारोह में सम्बोधित करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी।



अतुल-गुज.। 'बैलेस्पोट ऑफ लाइफ' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए सुनील लालभाई, चैयमैन, अतुल ग्रुप ऑफ कंपनी, ब्र.कु. शिवानी, ब्र.कु. रोहित व ब्र.कु. रंजन।



कलायत-हरियाणा। पंजाब केसरी के वरिष्ठ पत्रकार कुलदीप मित्तल को ईश्वरीय सौगत भेंट करते हुए ब्र.कु. दीपक, माउण्ट आर्बू। साथ हैं ब्र.कु. रेखा, ब्र.कु. कविता व ब्र.कु. अजोत।



मजरागोट-सूरत। बैंक ऑफ बड़ौदा, सूरत द्वारा आयोजित 'हेल्दी एंड हैपी लिविंग' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलन करते हुए ब्र.कु. डॉ. सविता, माउण्ट आर्बू, ब्र.कु. सोनल, चौक मैनेजर रवि महाराज तथा अन्य।



विजयवाड़ा-आ.प्र.। आध्यात्मिक कार्यक्रम के परचात् ए.पी.एस.पी. सिक्स्थ बटालियन कमाण्डेंट हुसेन शोब, ब्र.कु. अशोक गाबा, ब्र.कु. पदमजा, ब्र.कु. राधा तथा ब्र.कु. नागमणि।



दुर्ग-छ.ग.। नव-नियुक्त कलेक्टर आर. संगीता को ईश्वरीय सौगत भेंट करते हुए ब्र.कु. रीता। साथ हैं ब्र.कु. आस्था।